University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

M.Phil. in Sanskrit
(Semester Scheme)

Examination -2022-23

Dy. Registrar (Acad.)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम. फिल् (संस्कृत) पाठ्यक्रम –

संस्कृत पाठ्यक्रम समिति द्वारा अनुमोदित एम.फिल. (संस्कृत) का पाठ्यक्रम

विश्वविद्यालय की एम.फिल. की परीक्षा दो चरणों (दो सेमेस्टर) में होगी। प्रथम सेमेस्टर पीएच.डी. कोर्सवर्क के साथ होगा। पीएच.डी. कोर्सवर्क पाठ्यक्रम तथा एम.फिल. प्रथम सेमेस्टर का पाठ्यक्रम एक ही होगा। प्रथम सेमेस्टर की अवधि 6 माह की होगी।

इस पाठ्यक्रम में कुल चार प्रश्नपत्र होंगे जिनका प्रस्तावित पाठ्यक्रम नीचे दिया जा रहा है। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का होगा जिसमें लिखित परीक्षा 80 अंक तथा आंतरिक मूल्यांकन 20 अंक का होगा। किन्तु चतुर्थ प्रश्नपत्र परियोजना कार्य (च्तवरमबज ॅवता) पूरे 100 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र का न्यूनतम उत्तीर्णांक 40 (बाह्य तथा आंतरिक परीक्षा में पृथक्–पृथक् 40 प्रतिशत अंक) होगा तथा पीएच.डी. अथवा एम.फिल. में नामांकन की पात्रता हेतु कुल अंकों का योग 50 प्रतिशत होना अनिवार्य होगा। एम.फिल. (संस्कृत) प्रथम सेमेस्टर उत्तीर्ण विद्यार्थी द्वितीय सेमेस्टर के योग्य होंगे।

सेमेस्टर–प्रथम

(1) प्रथम प्रश्न पत्र – शोध प्रविधि एव पाण्डुलिपि विज्ञान

<u>प्रथम प्रश्नपत्र शोधप्रविधि–</u> इस प्रश्नपत्र में चार इकाइयां होंगी। प्रत्येक इकाई से कुल चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। किसी भी ईकाई से एक प्रश्न का उत्तर संस्कृत भाषा में देना होगा। प्रश्नपत्र की समयावधि तीन घंटे की होगी।

प्रथम इकाई– अनुसंधान का स्वरूप, अर्थ, प्रयोजन, सिद्धान्त और प्रकार। शोध के विविध पर्याय, अनुसंधान की विशेषताएं, अनुसंधान के अधिकारी, अनुसंधान एवं आलोचना, अनुसंधान कला है या विज्ञान, विषय निर्वाचन, विषय निर्वाचन की श्रेणियां, शोध विषय, रूपरेखा निर्माण, सामग्री संकलन–मुख्य एवं गौण स्रोत। सामग्री संकलन एवं वर्गीकरण, सहायक एवं संदर्भ ग्रंथों की सूची का निर्माण, उद्धरण एवं संदर्भोल्लेख विधि एवं प्रकार।

द्वितीय इकाई– अनुबन्ध योजना, पूर्वानुबन्ध–प्राक्कथन, विषयसूची, संदर्भ ग्रन्थ संकेत सूची। पश्चानुबन्ध–परिशिष्ठ, संदर्भ ग्रन्थ सूची, नामानुक्रमणिका, सारांश। ग्रन्थ सूची वर्गीकरण, मुद्रण कला एवं प्रूफ रीडिंग सामान्य परिचय, संस्कृत हस्तलेखों के पठन एवं अन्तर्राष्ट्रीय लेखन चिह्नों का परिचय, रोमन लिपि का ज्ञान।

तृतीय इकाई– पाठालोचन के सिद्धान्त, पाठानुसंधान का स्वरूप, पाठालोचन विधि अथवा प्रकिया, वंशवृक्ष निर्माण, पाठालोचन में शब्द और अर्थ का महत्त्व, पाठ सम्पादन एवं अर्थ समस्या, प्रामाणिक पाठ निर्धारण, पाठालोचन की सरणि, हस्तलिखित ग्रन्थों व पाठों के प्रकार, पाठ विकृतियां, पाठ विकृति कारण एवं शोधन विधि, विविधि हस्तलेखागारों के सूचीपत्रों का इतिहास व परिचय।

चतुर्थ इकाई– पाण्डुलिपि विज्ञान का स्वरूप, पाण्डुलिपि ग्रन्थ रचना प्रक्रिया और प्रकार, लेखक एवं लिपि का महत्त्व, पाण्डुलिपि के प्रकार, लिप्यासन के प्रकार, लेखन शैली के प्रकार, शिलालेखों के प्रकार, प्रशस्ति, पुष्पिका, ग्रन्थि, हड़ताल आदि का अर्थ एवं स्वरूप, काल निर्धारण एवं पाण्डुलिपियों में भारतीय अंक लेखन विधि, भारतीय कालगणना की जटिलताएं। पाण्डुलिपियों के शत्रु एवं उपचार,

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

ग्रन्थ–सूची निर्माण–विधि। प्रमुख लिपियों का ज्ञान– ब्राह्मी, खरोष्ठी, शारदा, नेवारी, बंगाली एवं देवनागरी।

अभिप्रस्तावित पुस्तकें–

1. पाण्डुलिपिविज्ञान, डॉ0 सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1989
2. पाठ सम्पादन के सिद्धान्त, डॉ0 कन्हैया सिंह, लोकभारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006
3. अनुसंधान की प्रविधि और प्रकिया, डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
4. अनुसंधान स्वरूप एवं प्रविधि, डॉ0 रामगोपाल शर्मा दिनेश, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

(2) द्वितीय प्रश्नपत्र – वेद, धर्म, दर्शन एवं काव्यशास्त्र का सामान्य ज्ञान

<u>द्वितीय प्रश्नपत्र (वेद, धर्म, दर्शन एवं काव्यशास्त्र का सामान्य ज्ञान)–</u> इस प्रश्नपत्र में कुल चार इकाइयां होंगी। कुल चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक समान हैं। छात्रों को प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न करना अनिवार्य है। किसी भी इकाई से एक प्रश्न का उत्तर संस्कृत भाषा में लिखना अनिवार्य है। प्रश्नपत्र की समयावधि तीन घंटे की होगी व प्रश्नपत्र कुल 80 अंको का होगा।

प्रथम इकाई (वेद)– वैदिक साहित्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की विषय वस्तु एवं विशेषताएं, वेदांगों की विषयवस्तु एवं विशेषताएं। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों का स्वरूप, प्रतिपाद्य विषय और विशेषताएं, प्रमुख संवाद सूक्त, पुरूरवा–उर्वशी, यम–यमी, सर्मा–पणि, विश्वामित्र–नदी संवाद, वैदिक देववाद, वैदिक काल निर्धारण विषयक विभिन्न सिद्धान्त, पाश्चात्य एवं भारतीय प्रमुख वेद भाष्यकार–पाश्चात्य एवं पौर्वात्य।

अभिप्रस्तावित पुस्तकें :

1. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – श्री बलदेव उपाध्याय
2. वैदिक वाड़मय का इतिहास – डॉ. सूर्यकान्त
3. वेद के प्रमुख भाष्यकारों का अवदान – राजस्थान संस्कृत अकादमी प्रकाशन,
4. पं. मधुसूदन ओझा चरितामृत – डॉ. मदन गोपाल शर्मा, राजस्थान पत्रिका जयपुर।
5. वैदिक साहित्य का इतिहास – कपिलदेव द्विवेदी

द्वितीय इकाई (धर्म)– भारतीय धर्मशास्त्र का उद्भव एवं विकास, धर्मलक्षण, सामान्य धर्म एवं विशेष धर्म, वर्णाश्रम धर्म, संस्कार–उपनयन और विवाह के विशेष संदर्भ में। पुत्रों के प्रकार और उत्तराधिकार के नियम, स्त्रीधन, व्यवहार विधि का सामान्य ज्ञान, राजधर्म, पातक और उपपातक।

अभिप्रस्तावित पुस्तकें :

1. मनुस्मृति–सम्पूर्ण
2. धर्मशास्त्र का इतिहास–पांच खण्ड–डॉ. पी.वी. काणे द्वारा लिखित
3. धर्मसिन्धु (प्रथम परिच्छेद) –काशीनाथ उपाध्याय
4. हिन्दू संस्कार– डॉ. राजबली पाण्डेय
5. कालमाधव– श्री माध्वाचार्य
6. धर्मद्रुम– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, वाराणसी

Raj Jain

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

तृतीय इकाई (दर्शन) – भारतीय आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन के विकास का सामान्य परिचय, भारतीय दर्शन परम्परा के तुलनात्मक संदर्भ में निम्न विषयों का समीक्षात्मक अध्ययन, प्रमाता, प्रमेय, प्रमाण, प्रमिति, चैतन्य, बन्धन, मोक्ष, सर्ग, प्रतिसर्ग एवं कारण–कार्य।

अभिप्रस्तावित पुस्तकें–

1. भारतीय दर्शन– डॉ. कुंवरलाल व्यास शिष्य– चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी
2. भारतीय दर्शन– डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
3. भारतीय दर्शन– डॉ. वाचस्पति गैरोला
4. भारतीय दर्शन– डॉ. उमेश मिश्र, हिन्दी समिति, इलाहाबाद।
5. भारतीय दर्शन–आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल, आगरा
6. भारतीय दर्शन की रूपरेखा– एम. हिरियन्ना (हिंदी अनुवाद)
7. सर्वदर्शनसंग्रहः, श्री उमाशंकर शर्मा ऋषि

चतुर्थ इकाई (काव्यशास्त्र) – संस्कृत काव्यशास्त्र का विकास, काव्यशास्त्र परम्परा के तुलनात्मक संदर्भ में विषयों का अध्ययन–काव्य हेतु, लक्षण, प्रयोजन एवं दोष (मम्मट एवं दण्डी के आधार पर)। रस, अलंकार, रीति, गुण, ध्वनि, औचित्य और वक्रोक्ति प्रस्थानों का विकास।

अभिप्रस्तावित पुस्तकें--

1. साहित्यशास्त्र – आचार्य सीताराम शास्त्री
2. काव्यप्रकाश – व्याख्याकार आचार्य विश्वेश्वर
3. ध्वन्यालोक – व्याख्याकार आचार्य विश्वेश्वर
4. साहित्यशास्त्र – श्री बलदेव उपाध्याय
5. रसगंगाधर – पण्डितराज जगन्नाथ
6. दशरूपक – धनंजय
7. सरस्वतीकंठाभरण– भोज
8. नाट्यशास्त्र – भरत
9. अभिनवभारती – अभिनव गुप्त
10. साहित्यदर्पण – कविराज जगन्नाथ
11. वक्रोक्तिजीवित– कुन्तक
12. काव्यालंकारसूत्र– वामन
13. काव्यादर्श – दण्डी
14. काव्यालंकार – भामह
15. काव्यानुशासन – हेमचन्द्र, मेहरचंद, लक्ष्मणदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली
16. श्रृंगारप्रकाश – भोज
17. आनन्दवर्धन – डॉ0 रेवाप्रसाद द्विवेदी
18. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास– पी वी काणे, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली
19. हिन्दी व्यक्तिविवेक– प्रो0 रेवाप्रसाद द्विदेदी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
20. संस्कृत काव्यशास्त्रेतिहासः– आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारतीय प्रकाशन, वाराणसी
21. ध्वन्यालोक–लोचनटीका– अभिनव गुप्त, आचार्य जगन्नाथ पाठक चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

Raj | Jai

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

(3) तृतीय प्रश्नपत्र–संस्कृत व्याकरण एवं व्याकरण दर्शन

तृतीय प्रश्नपत्र (संस्कृत व्याकरण एवं व्याकरण दर्शन)– इस प्रश्नपत्र में कुल चार इकाइयां होंगी। प्रत्येक इकाई में से एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अंक समान है। किसी भी इकाई से एक प्रश्न का उत्तर संस्कृत भाषा में लिखना अनिवार्य है।

प्रथम इकाई– संज्ञा एवं सन्धिप्रकरण लघुसिद्धान्तं कौमुदी से।

द्वितीय इकाई– कारक प्रकरण सिद्धान्त कौमुदी से

तृतीय इकाई– समास प्रकरण सिद्धान्त कौमुदी से

चतुर्थ इकाई– स्फोट का स्वरूप, शब्द ब्रह्म का स्वरूप, स्फोट एवं ध्वनि के बीच सम्बन्ध एवं शब्दार्थ सम्बन्ध, वाक् के प्रकार।

अभिप्रस्तावित पुस्तकें–

1. भर्तृहरि का वाक्यपदीय– अनुवादक डॉ0 रामचन्द्र द्विवेदी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. व्याकरण–महाभाष्य–पश्पशाहिन्कम– डॉ0 सत्यप्रकाश दुबे, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
3. वैयाकरण सिद्धान्त परमलघुमंजूषा-- नागेश भट्ट, सं0 कपिलदेव शास्त्री, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
4. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी–गोपाल दत्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

(4) चतुर्थ प्रश्न पत्र– शोध सर्वेक्षण

1. प्रथम इकाई– वैदिक साहित्य पर हुए शोध कार्यों का सर्वेक्षण
2. द्वितीय इकाई– लौकिक साहित्य
3. तृतीय इकाई– संस्कृत व्याकरणशास्त्र
4. चतुर्थ इकाई– संस्कृत दर्शनशास्त्र
5. पंचम इकाई– प्रस्तावित शोध कार्य की सार्थकता एवं उपयोगिता, उक्त विषय पर पूर्व में किये गये शोध कार्य की समीक्षा एवं शोध रूपरेखा, प्रारूप, अध्यायीकरण, सहायक ग्रन्थ सूची एवं अनुक्रमणिका।

अभिप्रस्तावित पुस्तकें–

1. Vedic Bibligraphy I- III, R.N.Dandekar
2. Bibligraphic Vedique - L. Renou
3. History of Indian Literature, Winternitz
4. History of Classical Sanskrit Literature, M.Krishnamacharier
5. History of Sanskrit Literature, Dasgupta & S.K.De
6. Kalidas Bibligoraphy, S.P.Narang
7. History of Sanskrit Poetics, P.V. Kane
8. Sanskrit Poetics, S.K.De
9. Systems of Sanskrit Grammar, S.K. Belvalkar
10. Oriental Studies, R.N. Dandekar & V. Raghavan
11. Survey of Indic Studies, R.N. Dandekar
12. 75 years of Indology, V.V. Mirashi
13. Mahabhasya, S.D.Joshi
14. Vakyapadiya (appendices), S.Abhyankar

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

एम. फिल् (संस्कृत) पाठ्यक्रम

संस्कृत पाठ्यक्रम समिति द्वारा अनुमोदित एम.फिल. (संस्कृत) का पाठ्यक्रम

सेमेस्टर–द्वितीय (एम.फिल्. संस्कृत)

एम.फिल. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर में कुल चार प्रश्नपत्र होंगे, प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का होगा, जिसमें 80 अंक की सैद्धान्तिक लिखित परीक्षा तथा 20 अंक की आन्तरिक परीक्षा होगी। चतुर्थ प्रश्नपत्र 100 अंक लघुशोध प्रबन्ध का ही होगा। उसमें आन्तरिक परीक्षा नहीं होगी।

एम.फिल्. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर की अवधि 6 माह की होगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र का न्यूनतम उत्तीर्णांक 40 प्रतिशत अंक (बाह्य तथा आंतरिक परीक्षा में पृथक्–पृथक् 40 प्रतिशत अंक) सहित कुल योग में 50 प्रतिशत अंक लाना अनिवार्य होगा।

प्रथम, द्वितीय एंव तृतीय प्रश्नपत्र में प्रत्येक इकाई में से दो प्रश्न पूछते हुए चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न पूछते हुए एक प्रश्न अथवा में देते हुए पूछना है। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।

प्रथम प्रश्नपत्र– भारतीय काव्यशास्त्र (80 अंक)

प्रथम इकाई :– नाट्यशास्त्र–तृतीय, चतुर्थ एवं षष्ठ अध्याय

द्वितीय इकाई:– साहित्यशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ, चिंतक एवं सिद्धान्त (आचार्य भरतमुनि से आर्चाय जगन्नाथ पर्यन्त)

तृतीय इकाई:– काव्यालंकार (भामह) द्वितीय अध्याय

चतुर्थ इकाई :– नाट्यदर्पण (रामचन्द्र–गुणचन्द्र) प्रथम विवेक

अभिप्रस्तावित पुस्तकें–

1. नाट्यशास्त्र–सं. डॉ. भोलानाथ शर्मा, साहित्य निकेतन, कानपुर
2. भरतनाट्यशास्त्र– डॉ. ब्रजमोहन चतुर्वेदी, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली
3. नाट्यशास्त्र– डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
4. नाट्यदर्पण–डॉ. देवीचन्द्र शर्मा, साहित्य भंडार, सुभाष बाजार, मेरठ
5. काव्यप्रकाश–मम्मट व्याख्या– डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6. काव्यप्रकाश–आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, ज्ञानमण्डल, वाराणसी
7. रससिद्धान्त की शास्त्रीय समीक्षा–प्रो. सुरजनदास स्वामी, प्रकाशक नीरज शर्मा, जयपुर
8. संस्कृत पोइटिक्स–एस.के. डे, अनु श्री मायाराम शर्मा, बिहीर हिन्दीग्रन्थ अकादमी, पटना
9. भारतीय साहित्यशास्त्र– डॉ. बलदेव उपाध्याय, नन्दकिशोर एण्ड सन्स, वाराणसी
10. रसालोचनम्– डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा, हंसा प्रकाशन, जयपुर
11. तुलनात्मक काव्याशास्त्र– डॉ राममूर्ति त्रिपाठी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
12. भारतीय काव्यसिद्धान्त– डॉ नगेन्द्र, डॉ तारकनाथ बाली, हिन्दी माध्यमा कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली वि.वि., दिल्ली
13. संस्कृत काव्याशास्त्र का इतिहास– म.म.पी.वी. काणे, अनु. डॉ इन्द्रचन्द्र शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

द्वितीय प्रश्नपत्र– वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी तथा वाक्यपदीय(80 अंक)

प्रथम इकाई :– लघुसिद्धान्त कौमुदी–नामधातु प्रकरण

द्वितीय इकाई:– प्रमुख व्याकरणशास्त्रियों का परिचय – पाणिनी, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, भट्टोजिदीक्षित, वरदराज, नागेशभट्ट

तृतीय इकाई:– वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी – परस्मैपद विधान, आत्मनेपदविधान

चतुर्थ इकाई :– वाक्यपदीय–ब्रह्मकाण्ड

अभिप्रस्तावित पुस्तकें–

1. भर्तृहरि का वाक्यपदीय– अनुवादक डॉ0 रामचन्द्र द्विवेदी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. व्याकरण–महाभाष्य–पश्पशाहिन्कम– डॉ0 सत्यप्रकाश दुबे, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
3. वैयाकरण सिद्धान्त परमलघुमंजूषा– नागेश भट्ट, सं0 कपिलदेव शास्त्री, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
4. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी–गोपाल दत्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

तृतीय प्रश्नपत्र– वेद–दर्शन एवं धर्मशास्त्र (80 अंक)

प्रथम इकाई :– संहिताए – निम्नलिखित सूक्तो का अध्ययन–
ऋग्वेद– वरुण 1.25,सूर्य 1.125, उषस् 3.61, पर्जन्य 5.83
शुक्ल यजुर्वेद– शिवसंकल्प 1.6, प्रजापति 1.5,
अथर्ववेद –राष्ट्राभिवर्द्धनम् 1.29, काल 10.53
ब्राह्मण – प्रतिपाद्य–विषय, विधि एवं उसके प्रकार
अग्निहोत्र एवं अग्निष्टोम यज्ञ, विभिन्न संहिताओं से ब्राह्मण ग्रन्थों की सम्बद्धता।

द्वितीय इकाई:– ऋक् प्रातिशाख्य– निम्नलिखित परिभाषाएं–
समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य,
निरुक्त (सप्तम अध्याय–दैवत काण्ड), मन्त्रों के प्रकार, देवताओं का स्वरूप, देवताओं की संख्या
योगसूत्र–व्यासभाष्य, चित्तभूमि, चित्तवृत्तियां, ईश्वर का स्वरूप, योगांङ्, समाधि, कैवल्य
वेदान्त–ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य 1.1

तृतीय इकाई:– न्याय–वैशेषिक : न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमान खण्ड)
सर्वदर्शन संग्रह–जैनमत, बौद्धमत

चतुर्थ इकाई :– कौटिलीय अर्थशास्त्र (प्रथम दस अधिकार)
मनुस्मृति (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अधिकार)
याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय मात्र)

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

अभिप्रस्तावित पुस्तकें–

1. ऋक्सूक्त वैजयन्ती– डॉ. एच.डी. वेलनकर (पूना से प्रकाशित)
2. ऋक्सूक्त समुच्चय– डॉ. रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. वैदिक वाङ्मय– एक परिशीलन, डॉ. ब्रजबिहारी चौबे
4. ऋग्भाष्य संग्रह-- देवराज्य चानना
5. वैदिक स्वरमीमांसा– श्री युधिष्ठिर मीमांसक
6. ऋग्वेद चयनिका– विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी
7. वेदविज्ञान– कर्पूरचन्द कुलिश, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
8. निरुक्त– डॉ. कपिलदेव शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ
9. निरुक्त– डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय, साहित्य भण्डार, मेरठ
10. अथर्ववेद भाष्य– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
11. वैदिक साहित्य और संस्कृति– डॉ. बल्देव उपाध्याय, शारदा मन्दिर, प्रकाशन, वाराणसी
12. वैदिक संग्रह एवं व्याख्या– डॉ. बल्देव सिंह मेहरा, शिव बुक्स इन्टरनेशनल, दिल्ली
13. वेदनवनीतम्– डॉ. (श्रीमति) उर्मिला देवी शर्मा, आस्था प्रकाशन, जयपुर
14. वेदान्तसार–सन्तराम श्रीवास्तव
15. वेदान्तसार–डॉ. शिवसागर त्रिपाठी, ज्ञान प्रकाशन
16. वेदान्तसार– डॉ. कृष्णकान्त त्रिपाठी, साहित्य भंडार, मेरठ
17. वेदान्तसार–श्री रामशरण शास्त्री, चौखम्बा वाराणसी
18. पातंजल योगदर्शनम्– डॉ. सुरेशचन्द श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती वाराणसी

19 भारतीय दर्शन– सं. डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

20. भारतीय दर्शन– डॉ. नन्दकिशोर देवराज, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
21. कारिकावली–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – आचार्य लोंमणि दाहाल, चौखम्बा वाराणसी

चतुर्थ प्रश्नपत्र– शोध–निबन्ध लेखन एवं प्रस्तुतीकरण (100 अंक)

Raj | Jaip

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur